4 कारक एवं विभक्ति-परिचय

संस्कृत में **'साक्षात् क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'** के अनुसार क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध रखने वाले शब्दों को ही कारक कहते हैं।

जैसे– ''प्रयागे राजा स्वहस्तेन कोषात् निर्धनेभ्य: वस्त्राणि ददाति।'' इस वाक्य में कारकों को निम्नांकित रूप में ज्ञात कर सकते हैं–

क: ददाति?	राजा	प्रथमा विभक्ति (कर्त्ता कारक)
किं ददाति?	वस्त्राणि	द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)
केन ददाति?	हस्तेन	तृतीया विभक्ति (करण कारक)
केभ्य: ददाति?	निर्धनेभ्य:	चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)
कस्मात् ददाति?	कोषात्	पञ्चमी विभक्ति (अपादान कारक)
कुत्र ददाति?	प्रयागे	सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

उक्त वाक्य में 'राजा' आदि पदों का क्रिया के साथ सम्बन्ध है, अत: ये कारक हैं। संस्कृत में सम्बन्ध पद तथा सम्बोधन पद कारक नहीं माने जाते हैं।

जैसे– ''दशरथस्य पुत्र: वनम् अगच्छत्।''

यहाँ 'दशरथस्य' का सम्बन्ध 'पुत्र' (कर्त्ता) से तो है, किन्तु क्रिया 'अगच्छत्' से नहीं है। इसी प्रकार 'प्रभो! रक्ष' यहाँ 'रक्ष' क्रिया पद का 'प्रभो' से कोई सम्बन्ध नहीं है।

अत: संस्कृत में कारक छह प्रकार के होते हैं–

कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण।

1. कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

सूत्र–स्वतन्त्र: कर्त्ता।

किसी भी क्रिया को स्वतन्त्रतापूर्वक करने वाले को कर्त्ता कहते हैं। कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे– 'राम: गृहं गच्छति।' इस वाक्य में गच्छति क्रिया को मोहन स्वतंत्र रूप से सम्पन्न कर रहा है, अत: वह कर्त्ता है।

2. कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

1. सूत्र–कर्तुरीप्सिततमं कर्म। कर्मणि द्वितीया।

नियम– जिस शब्द पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। जैसे–अहं **रामम्** पश्यामि (मैं राम को देखता हूँ)। इस वाक्य में देखने के व्यापार का फल 'राम' पर पड़ रहा है, अत: **'रामम्'** में कर्मकारक है। कर्म कारक का चिह्न 'को' है, किन्तु यह कभी-कभी अनुक्त (छिपा) भी रहता है; **जैसे–** 'राम पुस्तक पढ़ता है।' कर्तृवाच्य के कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है; **जैसे–** 'राम: **ग्रन्थं** पठति' किन्तु कर्मवाच्य के कर्म कारक में प्रथमा विभक्ति होती है; **जैसे–** रामेण **ग्रन्थ:** पठ्यते। (राम के द्वारा ग्रन्थ पढ़ा जाता है।)।

2. सूत्र– अकथितं च।

नियम– दुह् (दुहना), याच् (माँगना), पच् (पकाना), दण्ड (दण्ड देना), रुध् (रोकना), प्रच्छ् (पूछना), चि (चुनना), ब्रू (बोलना), शास् (शासन करना), जि (जीतना), मथ् (मथना), मुष् (ठगना), नी (ले जाना), हृ (हरण करना), कृष् (जोतना), बह् (ढोना)। संस्कृत में ये सोलह धातुएँ हैं तथा इनके अर्थ वाली दूसरी धातुएँ 'द्विकर्मक' हैं। इनके योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

इन धातुओं से सम्बद्ध हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करते समय विशेष सावधान रहना चाहिए **जैसे–** कृष्ण गाय से

दूध 'दुहता है' में 'दुहता है' (दुह्) क्रिया का 'दूध' प्रधान कर्म में और 'गाय से' में 'से' सामान्य रूप से चिह्न होने के कारण अपादान कारक (पंचमी विभक्ति) ज्ञात होती है, किन्तु 'दुह्' धातु के द्विकर्मक होने के कारण 'गाय से' की संस्कृत **'धेनोः'** (पंचमी) न होकर **'धेनुम्'** (द्वितीया) ही होगी और सम्पूर्ण वाक्य की संस्कृत **'कृष्णः धेनुम् दुग्धं दोग्धि'** होगी। यह दूसरा कर्म गौण (अप्रधान) कर्म कहा जाता है।

3. सूत्र—कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे।

नियम— समय तथा दूरी को बताने वाले शब्दों में निरन्तरता बतलाने के लिए द्वितीया विभक्ति होती है अर्थात् जितने समय अथवा जितनी दूरी तक कोई काम लगातार होता रहे या कोई वस्तु लगातार हो तो समय तथा दूरी वाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। **जैसे—**

समय— 'रामः **चतुर्दशवर्षाणि** वने न्यवसत्।' (राम चौदह वर्ष तक वन में रहे)। यहाँ वन में रहने का काम लगातार चौदह वर्षों तक हुआ है और 'चतुर्दश वर्ष' समयवाचक शब्द है। अतः **चतुर्दशवर्षाणि** में द्वितीया है।

दूरी— 'क्रोशम् कुटिला नदी' (नदी एक कोस तक टेढ़ी है)। नदी एक कोस तक लगातार टेढ़ी बही है और **क्रोश** दूरीवाचक शब्द है। अतः 'क्रोशम्' में द्वितीया विभक्ति है।

4. सूत्र—अधिशीङ्स्थासां कर्म।

नियम— यदि शीङ् (सोना), स्था) (ठहरना) तथा आस् (बैठना) धातुओं से पहले 'अधि' उपसर्ग आये तो इनके आधार में द्वितीया होती है; **जैसे—**

बालः **शय्यां** अधिशेते। (बालक खाट पर सोता है।)

रामः **गृहं** अधितिष्ठति। (राम घर में स्थित है।)

राजा **सिंहासनं** अध्यास्ते। (राजा सिंहासन पर बैठता है।)

विशेष— यदि शीङ्, स्था और आस् धातुओं से पहले 'अधि' उपसर्ग नहीं होगा, तो उनके आधार में सप्तमी ही होगी, द्वितीया नहीं। **जैसे—** बालः शय्याम् शेते।

5. सूत्र— अभितः परितः समया निकषा हाप्रतियोगेऽपि।

नियम— अभितः (सब ओर), परितः (चारों ओर), समया (पास), निकषा (निकट), हा (हाय) और प्रति (की ओर, को, के, लिए) के योग में द्वितीया होती है; **जैसे—**

ग्रामम् अभितः तडागाः सन्ति।

ग्रामम् **अभितः** आम्रवृक्षाः सन्ति। (गाँव के सब तरफ (चारों ओर) आम के पेड़ हैं।)

दुर्गम् **परितः** परिखा अस्ति। (दुर्ग के चारों ओर खाई है।)

विद्यालयम् अभितः पादपाः सन्ति। (विद्यालय के सब ओर पेड़ हैं।)

3. करण कारक (तृतीया विभक्ति)

1. सूत्र—साधकतमं करणम्। कर्तृकरणयोस्तृतीया।

नियम— जिसकी सहायता से कर्त्ता अपना कार्य पूरा करता है, उसमें करण कारक होता है और करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'से' तथा 'के द्वारा' होता है, **जैसे—**सः **नेत्राभ्यां** पश्यति। (वह नेत्रों से देखता है।) इसमें देखने का कार्य नेत्रों से होता है। अतः **नेत्राभ्याम्** में तृतीया है।

2. सूत्र—येनांगविकारः।

नियम— जिस अंग के द्वारा शरीरधारी में कोई विकार उत्पन्न हो जाता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है; **जैसे—** सः **नेत्रेण** काणः अस्ति। (वह आँख से काना है।) इस वाक्य में आँख के द्वारा शरीरधारी में कानेपन का विकार उत्पन्न हो गया है, अतः **'नेत्रेण'** में तृतीया है। सः पादेन खञ्जः अस्ति। पादेन में तृतीया विभक्ति है।

3. सूत्र— सहयुक्तेऽप्रधाने।

नियम— 'साथ' में अर्थ रखने वाले 'सह', 'साकम्', 'समम्', 'सार्धम्' शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है; **जैसे—**

रामः **कृष्णेन** सह गच्छति। (राम कृष्ण के साथ जाता है।) इस वाक्य में 'कृष्ण तथा सह' का योग है, क्योंकि कृष्ण के साथ जाया जाता है, अतः **कृष्णेन** में तृतीया विभक्ति है।

4. सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

1.सूत्र– कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्। चतुर्थी सम्प्रदाने।

नियम– जिसको कोई वस्तु दी जाती है, वह सम्प्रदान कारक होता है और सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'के लिए' अथवा 'को' है। **जैसे–** राजा विप्राय **धेनुं** ददाति। (राजा ब्राह्मण को गाय देता है।) इस वाक्य में विप्र को धेनु दिये जाने का वर्णन है, अतः **'विप्र'** में चतुर्थी विभक्ति हुई।

2. सूत्र– रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।

नियम– 'रुचि' का अर्थ रखने वाली धातुओं के योग से जिसे कोई वस्तु अच्छी लगती है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है; **जैसे-रामाय पठनं** रोचते। (राम को पढ़ना अच्छा लगता है।) इस वाक्य में राम को पढ़ना अच्छा लगता है तथा रुचि अर्थ वाली धातु **'रुच्'** का योग भी है। अतः **'रामाय'** में चतुर्थी हुई।

3. सूत्र–क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः।

नियम– क्रुध् (गुस्सा होना), द्रुह् (द्रोह करना, शत्रुता करना), ईर्ष्या (ईर्ष्या करना), असूय् (गुणों में दोष निकालना या जलन करना) धातुओं तथा इनकी समानार्थक धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाता है, द्रोह किया जाता है, ईर्ष्या की जाती है या असूया की जाती है; उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। **जैसे–** सः **हरये** क्रुध्यति, दुह्यति, ईर्ष्यति असूयति वा। (वह हरि से क्रुद्ध होता है, द्रोह करता है, ईर्ष्या करता है अथवा असूया करता है।)

4. सूत्र– नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलं वषट् योगाच्च।

नियम–नमः (नमस्कार), स्वस्ति (कल्याण), स्वाहा, स्वधा, अलम् (समर्थ, पर्याप्त, बराबर के जोड़ का) तथा वषट् (आहुति) के योग में चतुर्थी होती है; **जैसे–श्री गणेशाय नमः।** (श्री गणेश जी को नमस्कार है।) **प्रजाभ्यः** स्वस्ति। (प्रजा का कल्याण हो।) **अग्नये स्वधा।** (अग्नि के लिए बलि है।) गुरुवे नमः। (गुरु को नमस्कार)।

5. अपादान कारक (पंचमी विभक्ति)

1. सूत्र–ध्रुवमपायेऽपादानम् । अपादाने पंचमी ।

नियम–जिससे प्रत्यक्ष रूप में अथवा कल्पित रूप में कोई वस्तु अलग होती है, वह अपादान कारक होता है। अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'से' है; **जैसे–वृक्षात्** पर्णानि पतन्ति। (पेड़ से पत्ते गिरते हैं।) यहाँ 'वृक्ष' से पत्तों का अलग होना पाया जाता है, अतः **वृक्षात्** में पंचमी विभक्ति है।

2. सूत्र–भीत्रार्थानां भयहेतुः।

नियम–जिससे डरा जाता है या रक्षा की जाती है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। **जैसे–**साधुः **पापात्** बिभेति। (साधु पाप से डरता है।)। वीरः नारीम् **दुष्टात्** रक्षति। (वीर दुष्ट से नारी की रक्षा करता है।)

3. सूत्र–आख्यातोपयोगे।

नियम–जिससे नियमपूर्वक कुछ पढ़ा जाता है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है; **जैसे**–अहं **गुरोः** व्याकरणं पठामि। (मैं गुरुजी से व्याकरण पढ़ता हूँ।)

4. वार्तिक–जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्।

नियम–जुगुप्सा (घृणा), विराम (बन्द हो जाना, अलग हो जाना, छोड़ देना, हटना), प्रमाद (भूल या असावधानी करना) के समानार्थक शब्दों के साथ पंचमी होती है; **जैसे–सः पापात्** जुगुप्सते। (वह पाप से घृणा करता है।) सः **सत्यात्** न विरमते। (वह सत्य से नहीं हटता है।) सः **धर्मात्** न प्रमदते। (वह धर्म से प्रमाद नहीं करता है।) इन वाक्यों में क्रमशः **पापात्, सत्यात्** और **धर्मात्** में पंचमी विभक्ति है।

6. सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

1. सूत्र—षष्ठी शेषे।

नियम— कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण अर्थों के अतिरिक्त स्वस्वामिभाव, सामीप्य आदि सम्बन्धों को प्रकट करने हेतु षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा—

राज्ञः पुरुषः	राजा का पुरुष।
गंगायाः जलम्	गंगा का जल।
दशरथस्य पुत्रः	दशरथ का पुत्र।
पाञ्चालानां भूमिः	पाञ्चालों की भूमि।

2. सूत्र—षष्ठी हेतु प्रयोग।

नियम— यदि किसी वस्तु की हेतुता प्रकट करनी हो और हेतु शब्द का साक्षात् प्रयोग हो तो उस वस्तु तथा हेतु शब्द दोनों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा—

स अन्नस्य हेतोः वसति	वह अन्न के कारण रहता है।
स धनस्य हेतोः सेवते	वह धन के हेतु सेवा करता है।
मोहनः गृहस्य हेतोः यतते	मोहन घर के हेतु यत्न करता है।
अध्ययनस्य हेतोः वसति	अध्ययन के कारण रहता है।

3. सूत्र—क्तस्य च वर्तमाने।

नियम— वर्तमान अर्थ में होनेवाले 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है; यथा—

राज्ञां पूजितः विद्वान्	वह विद्वान्, जो राजाओं द्वारा पूजा जाता है।
सर्वेषामादृतः गुरुः	वह गुरु, जिसका सब आदर करते हैं।

4. सूत्र—षष्ठी चानादरे।

नियम— अनादर अर्थ प्रकट करने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा—

बालकानां चम्पकः चंचलः	बालकों में चम्पक चंचल है।
खगानां काकः धूर्तः	पक्षियों में कौआ धूर्त होता है।
पशूनां शृगालः मूर्खः	पशुओं में गीदड़ मूर्ख है।

7. अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

1. सूत्र—आधारोऽधिकरणम्। सप्तम्यधिकरणे च।

नियम—जिस स्थान या वस्तु पर कोई कार्य होता है, उसे अधिकरण कहते हैं और अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'में' या 'पर' है। **जैसे—**बालकः **विद्यालये** पठति। (बालक विद्यालय में पढ़ता है।) यहाँ पढ़ने का कार्य 'विद्यालय' में हो रहा है। सः **स्थाल्यां** तण्डुलान् पचति। (वह पतीली में चावल पकाता है।) यहाँ पकाने का कार्य स्थाली में हो रहा है, अतः '**स्थाल्यां**' में सप्तमी विभक्ति है।

2. सूत्र—यतश्च निर्धारणम्।

नियम—जब किसी समुदाय में किसी धातु या व्यक्ति की कोई विशेषता बतलाई जाती है, तब उस समुदायवाचक शब्द में षष्ठी या सप्तमी होती है, **जैसे—गवां, गोषु** वा कृष्णा बहुक्षीरा। (गायों में काली गाय अधिक दूध देती है।) यहाँ गायों के समुदाय में 'बहुक्षीरा' विशेषण के द्वारा कृष्णा की विशेषता बतलायी गई है। अतः **'गवां तथा गोषु'** में षष्ठी और सप्तमी हुई।

3. सूत्र—साध्वसाधुप्रयोगे च।

नियम—साधु और असाधु के प्रयोग में भी सप्तमी विभक्ति होती है; **जैसे—**साधुः कृष्णो **मातरि** (कृष्ण अपनी माँ के लिए बहुत अच्छे थे।) असाधुः **मातुले** (पर अपने मामा के लिए बहुत बुरे थे।) यहाँ **'मातरि'** और **'मातुले'** में सप्तमी विभक्ति है।

अभ्यास प्रश्न

(क) 1. **कारक किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।**

2. **विभक्ति कितनी है? प्रत्येक का परिचय दीजिए।**

3. **सूत्र लिखकर निम्नांकित कारकों के उदाहरण दीजिए–**
कर्म, करण, अपादान, अधिकरण।

4. **किन्हीं तीन वाक्यों के पदों में नियमोल्लेखपूर्वक विभक्ति का कारण बताइये–**
(अ) **तिलेषु** तैलम्।
(ब) रामः **जलेन** मुखं प्रक्षालयति।
(स) रामः **तापसेभ्यः** अभयं ददाति।
(द) कृष्णः **प्रयागात्** काशीं गच्छति।

5. **निम्नलिखित रेखाङ्कित (काले) पदों में से एक में कारक एवं विभक्ति का नामोल्लेख कीजिए–**
(अ) रामः **बाणेन** रावणं हतवान् ।
(ब) **बालकाय** पुस्तकं ददाति।
(स) **सा** गृहं गच्छति।
(द) **भवतः** नाम किम्।

6. **निम्नलिखित रेखाङ्कित (काले) पदों में से किसी एक में कारक तथा विभक्ति का नाम लिखिए–**
(अ) **रामेण** सह लक्ष्मणः अगच्छत्।
(ब) नदी **पर्वतात्** निर्गच्छति।
(स) **छात्रेषु** देवदत्तः कुशाग्रबुद्धिः।

7. 'हरिः बलिं वसुधा याचते' वाक्य के रेखांकित पद में विभक्ति का उल्लेख कीजिए।

8. 'पुरोहिताय दक्षिणां ददाति' में पुरोहिताय पद में कौन-सी विभक्ति है?
'भूमौ पतति आम्रफलं विषक्वम्' यहाँ भूमौ पद में कौन-सी विभक्ति है?

9. **निम्नलिखित रेखाङ्कित (काले) पदों में कारक तथा विभक्ति का नाम लिखिए–**

अध्यापकः **छात्राय** पुस्तकं ददाति।
सः गृहात् विद्यालयं गच्छति।
अहं **पुस्तकं** पठामि।
सः **पुस्तकं** पठति।
सः प्रकृत्या दयालुः।
हिमालयात् गंगा प्रभवति।
माता **बालके** स्निह्यति।
बालकेन सह आगतः पिता।
पुष्पा **शिवेन** सह गच्छति।
ऋते **ज्ञानात्** न मुक्तिः। **(2019AS)**
बालकाय क्रीडनम् रोचते।
त्वं **मह्यम्** पुस्तकं देहि।
बालकाय अपूपं रोचते।
भक्तः **शिवं** भजति।
काव्येषु नाटकं रम्यम्। **(2020MO)**
सीता **लेखन्या** अलिखत्। **(2020MP)**
सः **भिक्षुकाय** रूप्यकं यच्छति।
पिता **पुत्राय** पुस्तकं ददाति।
मुनिः **वने** वसति।
गङ्गा **हिमालयात्** निर्गच्छति।
सः **रामाय** पुस्तकं ददाति।
अहम् **रामेण** सह गच्छामि।
सम्मोहात् स्मृति विभ्रमः।
रामः **विद्यालयं** गच्छति।
नदीषु गंगा श्रेष्ठा।
रसेषु करुणः श्रेष्ठः।
रामः **वनं** गच्छति।
ब्राह्मणेभ्यः धनानि ददाति।
सः तण्डुलानि **ओदनं** पचति।
नमो **भगवते** वासुदेवाय।
सिंहात् बिभेति मृगः।
बालकेभ्यः मोदकाः रोचन्ते।
शिशुः **प्रकृत्या** सरलः अस्ति।
मह्यं पठनं रोचते।
रामः चतुर्दश वर्षाणि **वने** न्यवसत्।
गवां कृष्णा बहुक्षीरा।
रामः **ब्राह्मणेभ्यः** धनानि ददाति।
गुरुवे नमः। **(2019AP)**

मोहनः **कन्दुकेन** क्रीडति। **(2020MO)**
वृक्षाय जलं देहि।
अग्नये स्वाहा।
बालकः **अश्वात्** पतति।
मेघाः **वर्षणाय** गर्जन्ति।
प्रासादात् बालिका पतति।
गां दोग्धि पयः।
रामेण **बाणेन** हतो बाली।
बालकाः **फलानि** खादन्ति।
रामः **अश्वेन** गच्छति
उद्याने पुष्पाणि सन्ति।
वयम् **पुस्तकं** पठामः।
जलेन सिञ्चति।
मोक्षे इच्छा अस्ति।
सा **लेखिन्या** लिखति।
सः **अक्ष्णा** काणः।
सुरेशाय चलचित्रं रोचते।
अट्टालिकायां वानराः तिष्ठन्ति।
इमे छात्राः **ध्यानेन** पठन्ति।
सः **मातरि** स्निह्यति।
वृक्षाय जलं देहि।
तया पत्रं लिख्यते।
इदं **कस्य** गृहम् अस्ति।
मह्यं मोदकाः रोचन्ते।
गुरुवे नमोऽस्तु।
भूतेभ्यः बलिः।
महेशाय पुस्तकं ददाति।
रामेण सह सीता वनं गतवती।
ऋते **ज्ञानात्** न मुक्तिः।
सः **नेत्रेण** काणः अस्ति।
श्रीगणेशाय नमः। **(2020MO, MQ, MS)**
वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। **(2019AU, 20MO, MS)**
रामः **चतुर्दशवर्षाणि** वने न्यवसत्।
सः **नेत्राभ्यां** पश्यति।
सा **स्थाल्यां** तण्डुलान् पचति।
छात्रेषु देवदत्तः कुशाग्रबुद्धिः।
बालकेभ्यः मोदकाः रोचन्ते।
अहं **रामेण** सह गच्छामि।
अहं **सूर्यं** पश्यामि।
कृषकः **हलेन** क्षेत्रं कर्षति।
सः **दरिद्रेभ्यः** धनं यच्छति।
प्रासादात् बालः अपतत्।
मुनयः **ज्ञानाय** तपः कुर्वन्ति।
कृष्णः **गोकुले** वसति।
अहं **लक्ष्मणेन** सह गच्छामि।
श्यामः **सरोवरात्** जलं पिबति।
सीता **आम्रफलं** खादति।
कृषकः **हलेन** भूमिं कर्षति।
बालकाः **फलानि** खादन्ति।
ग्रामम् अभितः आम्रवृक्षाः सन्ति।
माता **पुत्रेण** सह आगच्छति।
अहं **गुरोः** व्याकरणं पठामि।
मोहनः **पादाभ्याम्** चलति।
रामाय नमः।
वृक्षात् फलं पतति।
सः **फलं** खादति।
कृष्णः **हस्ताभ्यां** बीजं वपति।
वनेषु सिंहः गर्जन्ति।
अहं **नगरात्** आगच्छामि।
बालकः **पुस्तकं** पठति।
वृद्धः **दण्डेन** चलति। **(2020MS)**
विप्राय गां ददाति।
शिक्षकः **पाठशालायां** पाठयति।
इदं दुग्धं **कस्मै** अस्ति।
पयसा **ओदनं** भुङ्क्ते।
रामेण सह सीता वनं गता।
सः **पादेन** खञ्जः।
ग्रामम् अभितः वृक्षाणि।
मह्यम् चलचित्रम् रोचते।
नदीषु गङ्गा श्रेष्ठा।
गणपतये नमः।
अहं **पुत्रेण** सह गच्छामि।
सः **कर्णेन** बधिरः।

(ख) सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. कारक कितने होते हैं?

(अ) नौ (ब) छह (स) सात (द) आठ

2. करण कारक में कौन-सी विभक्ति होती है?
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) चतुर्थी (द) पञ्चमी

3. 'छात्राः पठनाय विद्यालयं गच्छन्ति' में 'पठनाय' शब्द में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी

4. 'गवां कृष्णा बहुक्षीरा' वाक्य में 'गवां' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया (स) षष्ठी (द) पञ्चमी

5. चतुर्थी विभक्ति है–
(अ) करण कारक में (ब) सम्प्रदान कारक में (स) कर्म कारक में (द) अपादान कारक में

6. 'वृद्धः दण्डेन चलति' वाक्य में 'दण्डेन' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) पञ्चमी (द) षष्ठी

7. 'नृपः ब्राह्मणाय धनं ददाति' में 'ब्राह्मणाय' शब्द में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) चतुर्थी (स) सप्तमी (द) पञ्चमी

8. 'त्वं गुरोः आज्ञां पालयेः' में 'गुरोः' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया (स) चतुर्थी (द) षष्ठी

9. 'वृक्षात् पत्राणि पतन्ति' में 'वृक्षात्' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी (द) द्वितीया

10. 'शिशुः प्रकृत्या सरलः भवति' इस वाक्य में 'प्रकृत्या' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) पञ्चमी (स) प्रथमा (द) सप्तमी

11. 'सः नगरे वसति' वाक्य में 'नगरे' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) तृतीया (स) सप्तमी (द) पञ्चमी

12. '<u>स्मृतिभ्रंशात्</u> बुद्धिनाशः भवति' इस वाक्य के रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) चतुर्थी (द) पञ्चमी

13. 'सिंहः वने वसति' में 'वने' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) सप्तमी (स) चतुर्थी (द) पञ्चमी

14. 'तिलेषु तैलम्' वाक्य में 'तिलेषु' पद में प्रयुक्त विभक्ति है–
(अ) तृतीया (ब) पञ्चमी (स) सप्तमी (द) चतुर्थी

15. '<u>धर्मक्षेत्रे</u> कुरुक्षेत्रे' यहाँ रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) प्रथमा (ब) तृतीया (स) पञ्चमी (द) सप्तमी

16. बुद्धिनाशात् मरणं ध्रुवम्–इस वाक्य में 'बुद्धिनाशात्' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी (द) षष्ठी

17. 'नदी पर्वतात् निर्गच्छति।' वाक्य में पर्वतात् पद में प्रयुक्त विभक्ति है–
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) पञ्चमी (द) षष्ठी

18. 'इदं कस्य गृहम् अस्ति' वाक्य में 'कस्य' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) षष्ठी (द) सप्तमी

19. 'चौरात् बिभेति' में चौरात् पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी (द) षष्ठी

20. 'नेत्राभ्याम् अश्रूणि पतन्ति।' इस वाक्य के रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) सप्तमी (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी (द) तृतीया

21. 'सः भिक्षुकाय तण्डुलं ददाति' यहाँ रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) चतुर्थी (द) पञ्चमी

22. 'पुत्रेण सह माता गच्छति' यहाँ रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) पञ्चमी (ब) तृतीया (स) सप्तमी

23. 'बालकाय मिष्ठान्नं रोचते' में विभक्ति का सही विकल्प है–
(अ) चतुर्थी (ब) द्वितीया (स) सप्तमी

24. 'आकाशात् जलं पतति' रेखांकित का सही विकल्प है–
(अ) तृतीया विभक्ति (ब) पञ्चमी विभक्ति (स) सप्तमी विभक्ति

25. 'श्यामः बालकाय धनं ददाति' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) पञ्चमी (ब) षष्ठी (स) चतुर्थी

26. 'अहं रामेण सह गच्छामि' में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) द्वितीया (ब) सप्तमी (स) तृतीया

27. 'सः पित्रे असूयति' इस वाक्य के रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) पञ्चमी (ब) षष्ठी (स) चतुर्थी

28. 'द्वितीया' विभक्ति का प्रयोग होता है–
(अ) कर्म कारक में (ब) अपादान कारक में (स) अधिकरण कारक में

29. 'विद्या ज्ञानाय भवति' वाक्य में रेखांकित पद में विभक्ति है–
(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) पंचमी

30. 'बालिका लेखिन्या लिखति' में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) पंचमी (स) सप्तमी

31. 'बालः शय्याम् अधिशेते' वाक्य में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) सप्तमी (ब) द्वितीया (स) पंचमी

32. 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) पंचमी (स) सप्तमी

33. निम्नलिखित रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है?
मुनिः वनम् उपवसति।
(अ) पंचमी (ब) सप्तमी (स) द्वितीया

34. 'यस्य वामे जनकात्मजा' में कौन-सी विभक्ति है?
(अ) तृतीया (ब) पंचमी (स) सप्तमी

35. तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है–
(अ) कर्म कारक में (ब) करण कारक में (स) अपादान कारक में

36. मोक्षे इच्छा अस्ति।
(अ) प्रथमा (ब) सप्तमी (स) पञ्चमी

37. 'सः नेत्राभ्याम् पश्यति' वाक्य में रेखांकित पद में विभक्ति है? **(2018HQ, HR)**
(अ) चतुर्थी (ब) पञ्चमी (स) तृतीया